संपादक का नोट

मसीह में मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, मैं आप सभी को मेरे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अतुलनीय नाम पर अभिवादन देती हूं। हमारे अच्छे और गौरवशाली प्रभु ने इस दुनिया को बनाया है, छठे दिन उसने जानवरों और इंसान को बनाया। उन्होंने स्वयं की छवि में मनुष्य को बनाया और उनकी महिमा उस मनुष्य में सांस के रूप में उस में डाल दिया। प्रभु भी पृथ्वी के नीचे आया और आदमी के साथ चला था। यह हमारे प्रभु की इच्छा थी की वे मनुष्य को एक दैवीय गौरवशाली और संपूर्ण जीवन दे। लेकिन शैतान ने मनुष्य के खिलाफ एक योजना बनाई। वह मनुष्य को एक जानवर की तरह, गहरे पाप में एक सुअर की तरह रहे – पाप के कीचड़ में और उसके बंधन में रहे। वह मनुष्य को पाप में तैयार करना और उसे नरक की आग में ले जाना चाहता था। कुछ लोगों के मन शराब को पिने और एक सुअर की तरह गंदगी में गिरे रहने के लिए ऐसा करता है। कुछ लोगों को वह क्रोध की भावना दिया है कि वे जानवरों की तरह बने...

बाइबिल कहता है प्रकाशितवाक्य 22 : 15 ''पर कुत्ते, और टोन्हें, और व्यभिचारी, और हत्यारे और मूर्तिपूजक, और हर एक झूठ का चाहने वाला, और गढ़ने वाला बाहर रहेगा।'' यह हमें स्पष्ट रूप से पता चलता है कि इस तरह के गुणों के लोग स्वर्गीय राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते हैं। प्रभु ने जब मनुष्य को बनाया, उन्होंने उसे बुद्धि और अधिकार दिया की वह पवित्रता या पाप में से किसी का चुनाव करे, और मौत या जीवन का चुनाव उसके आगे था। जीवन का पेड़ उसके आगे रखा गया था की

वह अच्छे या बुरे का चुनाव करे। लेकिन मनुष्य ने हमारे प्यारे प्रभु के वचनों पर ध्यान नहीं दिया और इसके बजाय शैतान की बात सुनी, वह पाप में गिर गया। जब मनुष्य ने अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाया, वह पहले परमेश्वर के स्वरूप को खो दिया, फिर वह परमेश्वर की महिमा को खो दिया और फिर वह एकता को खो दिया जो पहले वह प्रभु के साथ साझेदारी करता था। वह उस अधिकार को खो दिया जो वह प्रभु को, अब्बा पिता कहकर पुकारता था और इस प्रकार यह हुआ कि आदम और हव्वा ने अदन के उद्यान को खो दिया। वे प्रभु के साथ की सहभागिता को खो दिया क्योंकि अब पाप मनुष्य और प्रभु के बीच आ चूका था। आज अपने आप को जांच करे की आप किसको चुनते हैं। हमने उन दिनों में देखा की इब्राहीम ने परमेश्वर को चुना। लेकिन लूत प्रभु की इच्छा के खिलाफ गया, उसका चुनाव किया जो उसकी दृष्टि में मनभावना लगा, अर्थात सदोम की सुंदर भूमि। हालांकि सदोम के लोग बेहद दुष्ट थे और प्रभु के खिलाफ पापी थे। आप अपने आप को देह की अभिलाषा को सोपना चाहते है या आत्मा के फल को ? प्रेरित याकूब लिखते हैं कि हम अपनी जीभ से परमेश्वर की स्तुति करते है, लेकिन उसी जीभ से हम मनुष्य को अभिशाप देते है जो प्रभु की छवि में बनाया गया हैं। इस प्रकार एक ही मुंह से आशीर्वाद और अभिशाप आता है। याकूब 3 : 9–12 ''9 इसी से हम प्रभु और पिता की स्तुति करते हैं; और इसी से मनुष्यों को जो परमेश्वर के स्वरूप में उत्पन्न हुए हैं श्राप देते हैं। 10 एक ही मुंह से धन्यवाद और श्राप दोनों निकलते हैं। 11 हे मेरे भाइयों, ऐसा नहीं होना चाहिए। 12 क्या सोते के एक ही मुंह से मीठा और खारा जल दोनों निकलते हैं? हे मेरे भाइयों, क्या अंजीर के पेड़ में जैतून, या दाख की लता में अंजीर लग सकते हैं? वैसे ही खारे सोते से मीठा पानी नहीं निकल सकता।''

प्यारे बच्चों, किसे चुनना है यह तुम्हारी पसंद है। चाहे नीनवे या तर्शीश के लिए जाए – निर्णय खुद योना को लेना था। प्रभु ने नीनवे में जाने के लिए नबी योना को सलाह दी लेकिन योना नाव पर चढ़कर तर्शीश

के लिए गया, जिसकी वजह से उसे काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा। मेरे प्रिय पाठकों और बच्चों, तुम जो भी करो, प्रभु की आज्ञा का पालन करो और उसकी आवाज को सुनते रहो। तो प्रभु आप के साथ होगा।

हर आत्मा कीमती है। प्रभु दोपहर की गर्मी में सामरिया के व्यभिचारिणी महिला को वितरित करने के लिए अपने दोपहर के भोजन के लिए जा रहे थे... वह बेथेस्डा तालाब में गया था जो की एक आदमी 38 साल से बीमार था....वह एक आदमी जो जन्म से अंधा था उसे दृष्टि देने के लिए यरीहो में गया।

हर आत्मा कीमती है। आप कई समस्याओं में पकडे होंगे यह सोचकर की कौन आपको छुड़ाएगा, लेकिन प्रभु आपको खोजकर आ रहा है। प्रभु ने आपके लिए उसका लहू बहाया है और वह आप से बहुतायत से प्यार करता है। वह आप को एक नया व्यक्ति बनाएगा। आपका चुनाव क्या है?

प्रभु मेरे सभी पाठकों को आशीष दे।

प्रभु की सेवा में आपकी,

पास्टर सरोजा म.

जागते रहो और अपने मुकुट के लिए प्रार्थना करो।

लूका 21 : 36 ''इसलिए जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आने वाली घटनाओं से बचने, और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो।'' वचन कहता है 'इसलिए' आने वाले दिनों के लिए, हमें जागते और प्रार्थना करते रहना चाहिए'। शब्द 'इसलिए' का अर्थ क्या है? प्रकाशितवाक्य 22 : 12 ''देख, मैं शीघ्र आने वाला हूं; और हर एक के काम के अनुसार बदला

देने के लिए प्रतिफल मेरे पास है।'' प्रभु कहते हैं, 'देखो, मैं जल्दी से आ रहा हूँ और मेरे इनाम मेरे साथ है जो अपने काम के अनुसार हर मनुष्य को देने के लिए हों।' इस प्रकार, हम प्रभु के सामने खड़े होने के लिए योग्य होना चाहिए जब वह एक बार फिर से आएगा। 'योग्य होने' का अर्थ क्या है? उदाहरण के लिए, इस दुनिया में हम केवल १८ साल की उम्र के बाद पात्र चुनाव के दौरान मतदान कर सकते हैं। यहां तक कि एक अच्छा वकील, रोगियों का काम नहीं कर सकता क्योंकि वह केवल कानून की अदालत में मुकदमा लड़ने के लिए योग्य है। इसके अलावा, ठीक इसके विपरीत एक डॉक्टर कानून की अदालत के मामलों में नहीं लड़ सकता, क्योंकि वह केवल इत ना ही काबिल हैं की अस्पतालों में मरीजों का इलाज करने के लिए योग्य है। इस प्रकार हर एक अपने काम करने के लिए योग्य है। इसी तरह, यहां तक कि हम उस भयानक दिन पर प्रभु के सामने खड़े होने के लिए योग्य होना चाहिए। योग्य होने के लिए, इसका मतलब है प्रभु हम में वह गुणवत्ता को देखे जो वह हमारे लिए इच्छा रखते हैं। इस प्रकार एक कानून हमें भी दिया गया है, हम पढ़ते हैं लूका 21 : 36 ''इसलिए जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आने वाली घटनाओं से बचने, और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो।'' केवल जब हम सतर्क रहे और प्रार्थना करते रहे, हम अपने आप को शत्रु की सब योजना को हमारे जीवन से दूर रख सकते हैं। यहां तक कि, फिर से, जैसा कि हम देख चुके हैं। यहोशू, शैतान ने यहोशू के बारे में नुक्स निकालकर और उसे गंदे वस्त्र प्रभु के दूत के सामने खड़े पहने हुए दिखाया। लेकिन, प्रभु ने यहोशू को गंदे वस्त्र हटाने का आज्ञा दिया और उसे साफ कपडे पहनाए और उस से प्रभु ने कहा, ''मैं तुम से तुम्हारे अधर्म को हटा चूका हूँ, और मैंने बहुमूल्य बागे के साथ तुम्हारा पहरावा किया है''। इस प्रकार, हमारे जीवन में भी कमियां है। यह ऐसी कमियां है जो कि शत्रु हमारे बारे में प्रभु को दिखाना चाहता हैं। शत्रु सब कुछ हमारे जीवन में और हमारे घरों में हो रहा है जानता है। बस जैसे की हमारे प्रभु हमारे बारे में सब कुछ जानता है, शत्रु भी सब कुछ हमारे जीवन में क्या हो रहा है जानता है, उस से कुछ बी छिपा नहीं है, शैतान लगातार प्रभु के सामने हमारे पापों के बारे में बताता रहता है। लेकिन इन सब के दौरान, यहोशू जिस तरह सिर्फ प्रभु के दूत के आगे खड़ा था, हम भी अपने प्रभु के सामने खड़े होने के लिए योग्य होना चाहिए। हाँ, शत्रु, प्रभु से हमारी कमजोरियों को दिखता रहता है, वह हमारी गलतियों की ओर इशारा करता रहता हैं। अगर हम अच्छा करते हैं, शत्रु कई लोगों को हमारे अच्छे कामों से बुरी बातें ढूंढने के

लिए खड़ा कराएगा या फिर अगर हम कोई गलती करें तो शत्रु हमारी गलतियों को बताते रहेगा। शत्रु लगातार हमारे जीवन में दर्द और दुख लाएगा, वह लोगों को हमारे जीवन में दुख लाने के लिए उठाते रहेगा। यह शत्रु का काम है। लेकिन हम प्रभु के बच्चे, प्रभु की आज्ञा अनुसार प्रार्थना करते रहना चाहिए, जिस प्रकार हमारे प्रभु ने यहोशू के गंदे वस्त्र को हटा दिया और उसे अच्छे कपड़ों के साथ पहिना दिया और उसे शैतान और प्रभु के दूत के सामने खड़े होने के लिए योग्य बनाया, वैसे ही प्रभु भी हमें उनकी कृपा और हम पर दया दिखा देंगे और हमें उसके सामने खड़े होने के लिए योग्य बनाते हैं। आज, प्रभु हमें चेतावनी दे रहा है की हम हमारे जीवन को शत्रु के काल से दूर रखें, हमें 'जागते और लगातार प्रार्थना करते रहना चाहिए'। हमें दर्द और दुख के बोझ तले दब के होना नहीं चाहिए जो कि शत्रु हमारे जीवन में लाता है, बल्कि हमें प्रभु पर ध्यान केंद्रित होना चाहिए और प्रार्थना करते रहना चाहिए। प्रभु ने वादा किया है की उनके साथ हमारे पुरस्कार को लाएगा, जब वह एक बार फिर से आएगा। प्रभु के हर वचन गहरी जड़ें है और बहुत स्पष्ट है, वचन में कोई अस्पष्टता नहीं है। कल्पना कीजिए, अगर हम दर्द और दुख के साथ फंस जाएं जो कि शत्रु हमारे जीवन में लाता है तो, हम डूब जाएंगे। लेकिन हर दर्द और दुख के साथ, हमें प्रभु पर ध्यान केंद्रित रहना चाहिए। याद रखें, कैसे पतरस ने प्रभु पर ध्यान केंद्रित किया था, जब वह तूफानी समुद्र पर चल रहा था। जिस क्षण उसने अपना ध्यान केंद्रित खो दिया वह डूबने लगा, लेकिन एक बार फिर जब वह प्रभु पर ध्यान केंद्रित किया, वह जीत हासिल कर पाया; केवल प्रभु की कृपा से। इस दुनिया में भी हम कई परीक्षणों और चार पक्षों से सभी क्लेश से चारों ओर से दबाए जाते है, लेकिन यह हमारा प्रयास होना चाहिए की केवल प्रभु पर ध्यान केंद्रित हों, वरना हम हमारा जीवन निराशा के साथ खत्म हो जाएगा, लेकिन फिर भी सभी परीक्षणों और क्लेश के माध्यम से, जब हम ध्यान केंद्रित रखते हैं और प्रभु की ओर पुकारते हैं उनकी कृपा अकेले ही हमारे लिए पर्याप्त है। हम इस दुनिया में गलत कर सकते है, हम कई बार गिरे होंगे, शैतान लगातार प्रभु को हमारे गलतियों के बारे में बताता होगा। लेकिन याद रखें, अगर एक धर्मी मनुष्य सौ बार गिरता है तो प्रभु उसे उठाता है। प्रभु हमारे हर लड़ाई को लड़ेगा। हमें प्रभु के आगे कभी गुरगुरावट नहीं करनी चाहिए, कहते हुए कि ''मैं बाइबल और प्रार्थना नियमित रूप से करता हूँ, बाइबल हमें बहुत सारी अच्छी कहानियां बताती है, यह हमें प्रोत्साहित करती है। लेकिन, मेरे जीवन में कुछ भी सही नहीं है, मेरे लिए हर बात जीवन में गलत है।'' **मत्ती अध्याय 5** यीशु ने

अपने आप सब अद्भुत आशीर्वाद का उपदेश दिया है, लेकिन जीवन में कुछ भी सही नहीं हुआ। हमें यह सीखना चाहिए की हम कभी गुरगुरावट नहीं करें, बल्कि हमें अपना पूरा भरोसा और विश्वास प्रभु में अकेले रखना चाहिए, वह हमारे जीवन को आशीर्वाद देगा, वह अपने समय में हमारे जीवन में सब कुछ अद्भुत करेगा। चलो फिर से पढ़ें प्रकाशितवाक्य 22 : 12 ''देख, मैं शीघ्र आने वाला हूं; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिए प्रतिफल मेरे पास है।'' लूका 21 : 36 ''इसलिए जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आने वाली घटनाओं से बचने, और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो।'' इस प्रकार, प्रभु के सामने योग्य खड़े होने के लिए जब वह हमारे इनाम के साथ आएगा, हमें 'जागते और प्रार्थना करते रहना चाहिए'। फिलिप्पियों 3 : 20 ''पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने ही बाट जोह रहे हैं।'' जीवन में हमारी इच्छा क्या होनी चाहिए? हम अकेले प्रभु पर इंतजार करने की इच्छा होनी चाहिए। प्रभु के वादे के अनुसार, उन्होंने कहा है कि वह हमारे लिए कई मकान तैयार करने के लिए जा रहे है कि वह वापस आकर हमें उसके साथ ले जाए। हमारी इच्छा यह है कि हम उस दिन के लिए योग्य पाए जाए कि जब वह अपने चुने हुए लोग को लेने के लिए आए। वह दिन कैसा भयानक होगा? हम नहीं जानते, हम उस दिन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं! याद रखें, हमारी नागरिकता स्वर्ग की है, इस प्रकार हमारे दिल की इच्छा हमेशा उस दिन के बारे में होना चाहिए कि जब प्रभु हमें उसके साथ लेने के लिए आएंगे। इस दुनिया में, हमें उनके वचन के माध्यम से आज्ञाकारिता होना चाहिए और यह भी की हमारे जीवन में उसकी आज्ञाओं को ध्यान में रखते हुए प्रभु के साथ रहने के लिए सीखना चाहिए, तो ही हम स्वर्ग में हमारी नागरिकता के योग्य हो पाएंगे और हमारा भविष्य प्रभु के राज्य में सुरक्षित हो जाएगा। सप्ताह के बाद सप्ताह, महीने के बाद महीने, हमारी इच्छा एक ही होनी चाहिए की, परमेश्वर के वचन और आदेश के आज्ञाकारी हो। एक बार भी यह इच्छा हमारे जीवन में कमजोर पड़ जाए, तो यह हमारे लिए मुश्किल हो जाएगा। इस प्रकार हम हर दिन हमारे जीवन में इस इच्छा को मजबूत करने की जरूरत है। कुलुस्सियों 3 : 1 ''सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है।'' हर दिन हमारी यह इच्छा होनी चाहिए कि हम परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठना चाहिए जैसे मसीह आज बैठे हुए है। हम इस दुनिया के लोगों को देखते हैं जो अविश्वसनीय कार्य करते है

की अस्थायी सुख प्राप्त कर सकें। उदाहरण के लिए, कुछ अतिरिक्त पैसा हासिल करने के लिए, वे थोड़ा भी जो उनके साथ है वह एक लॉटरी टिकट में निवेश करते हैं, यह आशा में कि वे बदले में बहुत सारा पैसा जीतेंगे। इस दुनिया के लोग सब झूठी बातों में निवेश करते हैं, उम्मीद करके की तत्काल भौतिक लाभ मिले। लेकिन अंत में सब कुछ विफल हो जाता है। जब तक हम ध्यान केंद्रित करें की यीशु मसीह के जीवन और इस जगत में उनके कष्टों और कैसे वह जीत के साथ इस दुनिया से उबरे और आज दाहिने हाथ पर परमेश्वर पिता के साथ स्वर्गीय राज्य में बैठे हैं। हाँ, हमारे लिए प्रभु का वादा है कि वह हमारे इनाम के साथ वापस आएगा और यह भी हमें उसके साथ साथ ले जाएगा। उदाहरण के लिए, जब हम एक नया फ्लैट बुक करते हैं तो, हम अपने ईएमआई भुगतान पर ध्यान केंद्रित करते हैं, हम सुनिश्चित करते है की भुगतान में चूक न हों और फिर हम तत्पर रहते हैं की कब फ्लैट तैयार हो जाएगा और कब हमें अपने फ्लैट पर अधिकार मिल जाएगा। इसी तरह, हमें भी लगातार प्रभु के वादे पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि वह हमारे इनाम के साथ आए और स्वर्गीय राज्य में उसके साथ हमें भी साथ ले जाए।

पवित्र शास्त्र में, दोनों में पुराने और नए करार में, हम देखते हैं प्रभु अपनी सेवा करने के लिए कइयों को बुलाया था। लेकिन कितने उनके बुलाने पर योग्य ठहरे, कितनो ने उनके बुलावे का जवाब दिया और कितने लापरवाही से उनके बुलावे को नजरअंदाज किया। शास्त्रों में, हमें ऐसाव की कहानी पता है, वह भी एक समय भोजन के लिए उसने अपने जन्मसिद्ध अधिकार को बेच दिया। हाँ, प्रभु ने हम सभी को बुलाया है, लेकिन हम में से कितने इस बुलावे के योग्य हैं यह जानना महत्वपूर्ण है। इफिसियों 4 : 1–2 ''1 सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। 2 अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो।'' हमारे प्रभु ने हम सभी का आह्वान दिया है की हम उसके बहनों, भाइयों, बेटियों और बेटों बने। यह बुलावे के साथ ही, वह चाहता है की हम विनम्र हो, नम्र, और लंबे समय से पीड़ित होकर सहन कर सकें और एक दूसरे से प्रेम करे। लेकिन हम में से कितने उसके बुलावे के योग्य हैं ?. शास्त्रों में, हम देखते हैं की प्रभु ने उनके नाम लेकर कइयों को बुलाया। जैसे मूसा, शमूएल, जक्कई। उसकी सेवा करने के लिए, प्रभु ने उनके पुरोहित, भविष्यद्वक्ताओं और राजा होने के लिए कईयों को बुलाया। नए करार में हम

देखते हैं की उन्होंने कइयों को बुलाया की वे धर्मान्तरण हो। जब प्रभु उसके चुने हुए को बुलाता है, वह हमारे नाम से बुलाता है और उनकी विशिष्ट उद्देश्य को पूरा करने के लिए कहता है। मत्ती 9 : 13 ''सो तुम जाकर इस का अर्थ सीख लो, कि मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूं; क्योंकि मैं धमिर्यों को नहीं परन्तु पापियों को बुलाने आया हूं।'' प्रभु ने यहाँ नाम नहीं लिया, लेकिन यहां वह पश्चाताप करने के लिए सभी पापियों को आह्वान देता है। उन्होंने हमें बुलाया है पश्चाताप करने के लिए ताकि हम अपने स्वर्गीय राज्य में पहुँच सकते हैं। आज, हम सभी चार पक्षों से विभिन्न समस्याओं के साथ दबाए जा सकते है, पाप हमारे भीतर भी हो सकता है। लेकिन प्रभु ने हमें स्पष्ट बुलावा दिया है ताकि हम पश्चाताप करे और उसके राज्य को हासिल करे। हमारा ईश्वर दयालु और कृपापूर्ण है, उनकी इच्छा नहीं है कि एक भी आत्मा इस दुनिया में नाश हों। इस प्रकार, हम ने पुराने करार में देखा है वह उनके नाम से लोगों को बुलाया है। नए करार में भी वह सब लोगों को उनके नाम से बुलाया है। लेकिन आज, वह हम सभी पापियों को पश्चाताप करने के लिए बुला रहा है, ताकि हम सब उनके अकेले कृपा और दया से बच जाए। वह हमारे लिए आया हैं और हमें हमारे हर पाप से बचाने के लिए तैयार है। इसलिए, हम सतर्क और प्रार्थनापूर्ण होना जारी रहना चाहिए। प्रभु हमारे पापी वस्त्र के अधर्म को हटाएगा और धर्म के नए कपड़ों के साथ हमें पहनाएगा और हमें उसके राज्य के लिए योग्य बबनाएगा। प्रभु हम पापियों से प्यार करता है, लेकिन हमारे पापों से नफरत करता है। जब हम अपने प्रभु को उद्धारकर्ता और परमेश्वर के रूप में स्वीकार कर लिया है, हमे इस दुनिया में सब कुछ त्यागने के लिए तैयार होना चाहिए ताकि हम प्रभु का प्यार हमारे भीतर हासिल कर सकें और उसे हमारे जीवन में पहला स्थान दे । यहां तक कि हमारे जीवन को खोने की कीमत पर, हमे उसे कभी नहीं त्यागना चाहिए। याद रखें, यीशु अपने बारह चेलों को चुना है और उनके पैर भी धोए, लेकिन पतरस ने कहा कि 'हे प्रभु आप मेरे पैर नहीं धो सकते हैं', जिसके लिए यीशु ने उत्तर दिया, ''अगर मैंने तुम्हारे पैरों को नहीं धोया, तो तुम्हारा मुझ में कोई हिस्सा नहीं है''। इसके तत्काल बाद, पतरस कहता हैं, ''प्रभु मेरे पूरे शरीर को धो दे''। इसी तरह, अगर हम यीशु के लहू से धुले नहीं हैं, तो, हम कभी उनके बच्चे नहीं बन सकते। इसलिए, हम अपने आप को वचन की सच्चाई को आत्मसमर्पण करना चाहिए, और उनके लहू से धोए जाए ताकि हमें हमारे पापों से मुक्ति मिले। मरकुस 1 : 20 ''उस ने तुरन्त उन्हें बुलाया; और वे अपने पिता जब्दी को मजदूरों के साथ नाव पर छोड़कर, उसके पीछे चले गए।'' मत्ती 4 :

21 ''और वहां से आगे बढ़कर, उस ने और दो भाइयों अर्थात जब्दी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने पिता जब्दी के साथ नाव पर अपने जालों को सुधारते देखा; और उन्हें भी बुलाया।'' यहाँ हम देखते हैं कि यीशु बुद्धिमानो को बुलावा नहीं दिया और अपने काम करने के लिए सिखाया है, लेकिन विनम्र मछुआरों को चुना। प्रभु ने याकूब और जब्दी के यूहन्ना को बुलाया और वे तुरंत उनकी नावों , उनके पिता के व्यवसाय को छोड़ दिया और यीशु के पीछे हो लिए। हम ने यह भी देखा है कि उनकी माँ एक परमेश्वर का भय माननेवाली और धर्मी महिला थी। उसने यीशु से कहा की वह दोनों बेटों को, प्रभु के बाएं ओर और एक दाहिने ओर रखें। पूरा परिवार प्रभु का भय मानता था, माता–पिता ने पुत्रों को कभी नहीं पूछा, के वे क्यों अपने मछली पकड़ने के व्यवसाय को छोड़ दिया और यीशु के पीछे हो लिए ? इसका मतलब है कि पूरे परिवार ने प्रभु को स्वीकार कर लिया था और इस तरह वे आनन्द से यीशु मसीह के पीछे चले जब उन्हें प्रभु ने बुलाया। हम जानते हैं कि अंत तक, उनकी माता यीशु के साथ थी यहाँ तक कि क्रूस पर वह मरियम के साथ थी जो यीशु की माता थी। यीशु के सूली पर चढ़ाए जाने के तीसरे दिन पर, वह तीन महिलाओं के बीच थी जो यीशु के मकबरे को देखने के लिए गए थे और उसका शरीर कब्र से गायब पाया गया था। इस परिवार में यीशु के लिए प्यार की जड़ें गहरी थी। इसी तरह, अगर हमारे परिवारों को गहरी जड़ें प्रभु के साथ निहित हैं, वे परमेश्वर के प्रेम में मजबूत हो जाएंगे। यह महत्वपूर्ण है कि अगर हम चाहते हैं की हमारे बच्चे परमेश्वर के भय और प्रेम में बने रहे, तो हम माता पिता के रूप में उन्हें पालन करने के लिए एक उदाहरण होना चाहिए। हम प्रभु की इच्छा और योजना के अनुसार हमारे जीवन को जीना चाहिए, हमे प्रभु का भय मन्ना चाहिए, हमे प्रभु का वचन पढ़ना चाहिए और नियमित रूप से परिवार में प्रार्थना करना चाहिए। हमे हमारे जीवन को कभी परमेश्वर के भय और प्यार के बिना नहीं जीना चाहिए। परिवार जिनके नाम बाइबल में दर्ज हैं, वे दर्ज की गई हैं क्योंकि उन्होंने वास्तव में प्रभु से प्यार किया और उनकी कृपा से अकेले उनके नाम पवित्र बाइबल में आज दिखाई दे रहे हैं। हमारी भी इच्छा यह होना चाहिए कि हमारे परिवार के नाम भी 'जीवन की पुस्तक' में लिखे जाए। हम प्रभु के आगे योग्य होना चाहिए, उन्होंने अपना जीवन हम पापियों के लिए दिया है, इस गर्व और इस दुनिया के अभिमानी के लिए दिया गया है, प्रभु हमें उद्धार देने के लिए आया है। हमे हमारी प्रार्थना को जारी रखना चाहिए, एक परिवार के लिए एक अच्छा प्रार्थना योद्धा परिवार में ज्यादा जीत हासिल कर सकता है। हमारा

परमेश्वर हमारे आँसू को देखता है, वह कभी इसे बर्बाद होने नहीं देगा, वह एक बोतल में हमारे आसुओं को जमा करता है और हमारे परिवार के लिए हमारे हर एक बूंद आंसू को आशीष देगा। इस प्रकार, प्रभु कहते हैं, मैं जल्द ही आऊंगा और तुम्हारे कामों के अनुसार इनाम लाएगा, इस प्रकार 'जागते रहो और प्रार्थना करो'। 2 तीमुथियुस 4 : 2 ''कि तू वचन को प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट, और समझा।'' प्रभु का आदेश है कि लोग आसपास हों या नहीं, हमे वचन साहस और सत्य में सुनाने के लिए जारी रहना चाहिए। जो भी वचन प्रभु ने हमें दिया है, हमें प्रचार करना चाहिए और लोगों को वचन की सच्चाई सिखाना चाहिए। हाँ, यह वचन पहले उपदेशक के लिए है, हमें लोगों को प्रसन्ता करने या खुश रखने के लिए प्रचार नहीं करना चाहिए। हमे सत्य उपदेश देना चाहिए और हर गलत करने पर लोग अपराधी हैं बताएं और फिर वचन को पूरा करने के लिए प्रभु पर इंतजार करना चाहिए। हमारी आशा, भरोसा प्रभु अकेले में होना चाहिए। अगर प्रभु कल आता है, हमें यकीन होना चाहिए कि हम उसके साथ जाएंगे। हमे लोगों से नहीं डरना चाहिए और आश्चर्य भी नहीं करना चाहिए कि वे हमारे बारे में क्या सोचेंगे या हमारे उपदेश के बारे में क्या सोचेंगे। मूसा, हमेशा अपने हाथ उठाता और प्रभु की स्तुति करता था। निर्गमन 9 : 29 ''मूसा ने उससे कहा, नगर से निकलते ही मैं यहोवा की ओर हाथ फैलाऊंगा, तब बादल का गरजना बन्द हो जाएगा, और ओले फिर न गिरेंगे, इस से तू जान लेगा कि पृथ्वी यहोवा ही की है।'' इस दुष्टान्त में मूसा कहते हैं, ''जब मैं अपने हाथों को उठाता हूँ और परमेश्वर की स्तुति करता हूँ, गड़गड़ाहट समाप्त हो जाएगा और कोई और जय न होगा और हम जान जाएंगे कि यह धरती प्रभु की है।'' उदाहरण के लिए, जब हम गीत 'होसन्ना, होसन्ना उच्चतम पर' गाते हैं ..... हमारी प्रशंसा और हमारी आत्मा उच्चतम में प्रभु तक पहुचनी चाहिए। हम शारीरिक रूप से यहां हो सकते है, लेकिन हमारी स्तुति और हमारी आत्मा 'सर्वोच्च' स्वर्ग तक पहुँचने चाहिए। यहेजकेल 44 : 1–2 ''1 फिर वह मुझे पवित्र स्थान के उस बाहरी फाटक के पास लौटा ले गया, जो पूर्वमुखी है; और वह बन्द था। 2 तब यहोवा ने मुझ से कहा, यह फाटक बन्द रहे और खेला न जाएय कोई इस से हो कर भीतर जाने न पाए; क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस से हो कर भीतर आया है; इस कारण यह बन्द रहे।'' हम देखते हैं की नबी यहेजकेल ने इस बारे में भविष्यवाणी की, कैसे यीशु आकाश में उठा लिया गया, पुण्यस्थान द्वार तब से बंद कर दिया गया है। याद रखें, यीशु

निश्चित रूप से उस ही जगह पर उतारकर आएगा और एक बार फिर से फाटक खुल जाएगा। हमारे प्रभु परमेश्वर अकेले ही बंद द्वार को खोल सकते हैं, कोई मनुष्य ऐसा नहीं कर सकता। जब हम इसराइल का दौरा करने गए थे, हमने देखा की कैसे मंदिर के फाटक आज भी बंद हैं। लोग केवल उस पवित्र जगह के आसपास लड़ सकते हैं, यह दावा करते हुए की जगह उनकी है, लेकिन सच्चाई यह है कि मुख्य द्वार यीशु के दूसरे आगमन पर ही खुलेगा। यह भविष्यवाणी भी नबी जकर्याह कर चुके हैं जकर्याह 14 : 4 ''और उस समय वह जलपाई के पर्वत पर पांव धरेगा, जो पूरब ओर यरूशलेम के सामन है; तब जलपाई का पर्वत पूरब से लेकर पच्छिम तक बीचों–बीच से फटकर बहुत बड़ा खड्ड हो जाएगा; तब आधा पर्वत उत्तर की ओर और आधा दक्खिन की ओर हट जाएगा।'' उस समय, मंदिर का द्वार खुलके टूट जाएगा। यह तो केवल वह समय है कि हम प्रभु की ताकतवर शक्तियों और सामर्थ्य का पता चल जाएगा। यहां तक कि जब यीशु ने इस पृथ्वी के मुख पर चले थे वह केवल चारों ओर वचन ही प्रचार करते थे। वचन की छिपी सच्चाई, आज भी पापियों के लिए और खोए हुए के लिए प्रचार किया जाना चाहिए। हम जानते हैं कि कैसे यीशु यरूशलेम को देखकर रोने लगे, यह वही मंदिर है, 'आंसू के आकार का' है, हमने देखा है जब हम यरूशलेम के दौरे पर थे। मंदिर की तस्वीर 'मुर्गी है जो उसके पंखों से उसके चूजों की रक्षा कर रही है'। आज भी हमारे प्रभु यीशु हमारे लिए रो रहे है, क्योंकि सब कुछ इस दुनिया में पारित होगा जैसा की 'वचन' के रूप में दर्ज किया गया है। यशायाह में, हम में से 'कुम्हार और मिट्टी' की कहानी के बारे में पढ़ा है, इस्राएली मिट्टी के रूप में माने जाते थे और यीशु कुम्हार जो उन्हें ढालता था। उदाहरण के लिए, कुम्हार और मिट्टी की कहानी – एक दिन मिट्टी कुम्हार के पास दौड़ के आता है, और उसे बताता है कि उसे एक सुंदर बर्तन में ढाल दे। कुम्हार ने पानी के साथ बहुत सख्ती से मिट्टी का परिमार्जन करना शुरू किया, लेकिन मिट्टी परेशान हो जाता है, अपने कठोर परिमार्जन से दुखी होता है, क्रोध में मिट्टी कुम्हार से कहता है ''मैं एक सुंदर बर्तन बनना नहीं चाहता''। इसके बाद एक और मिट्टी आता है और कुम्हार को बताता है कि, मैं एक सुंदर बर्तन बनना चाहता हूँ। तुम मुझे सख्ती से परिमार्जन कर सकते हो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। अब कुम्हार एक ही प्रक्रिया को दोहराता है और अब एक पहिया पर मिट्टी डालता है और उसे घुमाना शुरू करता है। लेकिन अभी पहिया घुमाना शुरू ही हुआ था की, मिट्टी को चक्कर आने लगा और बंद करने के लिए कुम्हार से कहता है, यह एक सुंदर बर्तन बनने के लिए नहीं

चाहता है। अब तीसरा मिट्टी कुम्हार के पास आता है और कहता है कि मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी अगर तुम सख्ती से मुझे पहिये पर रखकर परिवर्जन करो, लेकिन मैं एक सुंदर बर्तन बनना चाहता हूँ। कुम्भार सभी चरणों को दोहराता है, अब कुम्हार मिट्टी को पहिये से अलग करने के लिए काटता है। कुम्हार काटना शुरू होता है की, मिट्टी का चिल्लाना शुरू होता है, आप मुझे काटकर मारना चाहते हैं। मैं एक सुंदर बर्तन नहीं बनना चाहता हूँ और भाग जाता है। अब चौथे मिट्टी की बारी, वह कुम्भार से कहता है की आप मुझे सकती से परिवर्जन करो, पहिया पर रखकर मुझे घुमाओ, मुझे काटो कोई समस्या नहीं है, लेकिन मैं एक सुंदर बर्तन बनना चाहता हूँ। कुम्भार सभी तरीकों को पहिये से दोहराया और अब पहिया से इसे काटने के बाद उसे पकने के लिए भट्ठी में डालना जरुरी था, मिट्टी चिल्लाना शुरू करता है 'मैं पकाया जाना नहीं चाहता', तो वह भाग जाता है। कहानी का अभिप्राय यह है की 'जब तक की हम भट्ठी में न जाए, हम प्रभु के लिए एक सुंदर बर्तन कभी नहीं बन सकते' है। प्रभु के प्रिय बनने के लिए, हमें अपने आप को प्रभु के हाथों में पूरी तरह से आत्मसमर्पण करना जरुरी है। उसके बाद ही वह हमें एक सुंदर बर्तन उसके महिमा के लिए बना सकता हैं। याद रखें, हम अपने परमेश्वर से बहुत प्यार करते होंगे, लेकिन निश्चित रूप से प्रभु हमें सौ गुना अधिक प्यार करता है की तुलना में हम उसे प्यार करे। इसलिए, एक सुंदर बर्तन बनने के लिए, हमें अच्छी तरह से बर्तन बनाने के हर प्रक्रिया के माध्यम से जाना चाहिए। इस प्रकार, प्रभु के लिए योग्य गिने जाए ऐसा होने के लिए और यह है कि प्रभु उनके बच्चों में सभी गुण वह चाहता है, प्रभु हमें आज चेतावनी देता है कि हम 'जागते और प्रार्थना करते रहना चाहिए' हमेशा।

प्रभु उनके वचन के माध्यम से हम में से हर एक को आशीर्वाद दे!

पास्टर सरोज म.